

म्यूचुअल फंड, आसान हिन्दी में

पहली बार निवेश करने वाले परिवारों के लिए छह छोटे पेज: म्यूचुअल फंड क्या है, SIP क्या है, शुरुआत कैसे होती है, KYC, नॉमिनी, और हम कैसे काम करते हैं।

ये पेज हमारे अंग्रेज़ी लेखों का हिन्दी अनुवाद हैं — वही तथ्य, वही सीमाएँ, बस भाषा अलग। हमारे सीखने के केंद्र के लेख भी हिन्दी में हैं, एक लेख को छोड़कर, जो अंग्रेज़ी में ही है।

+91 77779 47060 · info@h2investment.in · h2investment.in/hi

Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad — 380005, Gujarat, India

म्यूचुअल फंड निवेश बाज़ार जोखिमों के अधीन हैं। योजना से संबंधित सभी दस्तावेज़ ध्यान से पढ़ें।

Mutual Fund investments are subject to market risks, read all scheme related documents carefully.

- म्यूचुअल फंड क्या है?** — बहुत से लोगों का साझा पैसा कैसे काम करता है, NAV क्या है, और कौन क्या काम करता है।
- SIP क्या है?** — SIP कोई प्रोडक्ट नहीं, निवेश का तरीका है — यह फ़र्क समझ आए तो बहुत-सी उलझन दूर हो जाती है।
- पहली SIP कैसे शुरू करें** — चार कदम क्रम से: KYC, योजना और रकम, ऑटो-डेबिट मैन्डेट, और तारीख।
- KYC कैसे पूरी करें** — एक बार की पहचान जाँच: क्या चाहिए, तीन तरीके, और KYC स्टेटस क्यों मायने रखता है।
- नॉमिनेशन, और यह क्यों मायने रखता है** — नॉमिनी जोड़ने से परिवार के लिए बाद में दावा कितना आसान होता है, और नॉमिनी वसीयत क्यों नहीं है।
- H2 कैसे काम करता है** — बातचीत से पहले निवेश तक के पाँच कदम, आपका पैसा कहाँ जाता है, और हमसे संपर्क।

म्यूचुअल फंड क्या है?

म्यूचुअल फंड बहुत से लोगों के पैसे का एक साझा फंड है, जो पहले से लिखे नियमों के अनुसार निवेश होता है, और उसमें आपके हिस्से की कीमत रोज़ एक बार तय होती है। बाकी सब विस्तार है।

म्यूचुअल फंड की ज़्यादातर व्याख्याएँ “डायवर्सिफ़िकेशन” शब्द से शुरू होती हैं और दूसरे पैराग्राफ़ तक पाठक थक जाता है। यहाँ इसका तरीका उसी क्रम में समझाया गया है, जिस क्रम में यह असल में होता है।

पैसा इकट्ठा कैसे होता है

एक ही तरह का निवेश चाहने वाले बहुत से लोगों से फंड हाउस पैसा इकट्ठा करता है। यह पैसा एक फंड में रखकर, पहले से लिखे उद्देश्य (मैडेट) के अनुसार, उससे शेयर, बॉन्ड या दोनों खरीदता है।

आप सीधे शेयर के मालिक नहीं होते। आप इस फंड की **यूनिट** रखते हैं, अपने लगाए पैसे के अनुपात में। ₹1,000 करोड़ के फंड में आप ₹10,000 लगाएँ, तो उसकी हर चीज़ में — हर शेयर में — आपका हिस्सा दस लाखवाँ भाग है, बाकी सबकी तरह उसी अनुपात में।

यही अनुपात असली बात है। अकेले ₹10,000 में दो कंपनियों के कुछ शेयर आते हैं। फंड के ज़रिए वही रकम तीस या पचास कंपनियों में छोटा हिस्सा देती है। इससे पैसा बढ़ता है, ऐसा नहीं; लेकिन किसी एक कंपनी के डूबने को झेला जा सकता है।

NAV, और उसका आँकड़ा अपने-आप में क्यों कुछ नहीं बताता

NAV (नेट एसेट वैल्यू शुद्ध परिसंपत्ति मूल्य) यानी फंड की सारी संपत्ति की कीमत में से उसकी देनदारी घटाकर, कुल यूनिट की संख्या से भाग देने पर आने वाला आँकड़ा। हर कामकाजी दिन बाज़ार बंद होने के बाद यह एक बार निकाला जाता है।

इसलिए ₹15 के NAV वाली योजना ₹450 के NAV वाली योजना से “सस्ती” नहीं है, और उसमें बढ़ने की ज़्यादा गुंजाइश भी नहीं। दोनों में ₹15,000 लगाएँ, तो एक में 1,000 यूनिट मिलेंगी और दूसरी में लगभग 33 — पर दोनों में आपका निवेश ₹15,000 ही है। दोनों दसवाँ हिस्सा बढ़ें, तो दोनों में ₹16,500 हो जाएगा। NAV टुकड़े का आकार है, दाम का लेबल नहीं।

पहली बार निवेश करने वाले सबसे ज़्यादा यहीं उलझते हैं, इसलिए साफ़ कह दें: कम NAV कुछ भी नहीं बताता।

कौन-कौन जुड़ा है

चार पक्ष हैं, और कौन क्या करता है यह जानना काम का है, क्योंकि हर एक की आपके प्रति अलग ज़िम्मेदारी है।

- **फंड हाउस** (AMC, एसेट मैनेजमेंट कंपनी) फंड मैनेजर को रखता है और नियमों के भीतर निवेश के फैसले लेता है। योजना पर उसी का नाम होता है।

- **ट्रस्टी** एक अलग कानूनी संस्था है। यह योजना की संपत्ति आपकी, यानी यूनिट-धारक की, ओर से ट्रस्ट में रखता है और जाँचता है कि फंड हाउस वही कर रहा है जो उसने कहा था। इसी व्यवस्था की वजह से पैसा फंड हाउस के अपने खातों में नहीं रहता।
- **रजिस्ट्रार** (RTA, जैसे CAMS या KFinTech) किसके पास कितनी यूनिट हैं इसका रिकॉर्ड रखता है, आपकी खरीद और निकासी की प्रक्रिया करता है और स्टेटमेंट भेजता है।
- **वितरक** — यानी हम — योजनाओं में से चुनने में मदद करते हैं, आवेदन का काम संभालते हैं और बाद में फोलियो की सेवा देते हैं। वितरक पैसे का प्रबंधन नहीं करता और पैसा अपने पास नहीं रखता।

आपका पैसा आपके बैंक खाते से सीधे योजना में जाता है। वह वितरक से होकर नहीं गुजरता, और यूनिट आपके नाम पर आवंटित होती हैं।

मुख्य प्रकार, संक्षेप में

श्रेणियाँ SEBI तय करता है, इसलिए "लार्ज-कैप फंड" का ढाँचा हर फंड हाउस में एक जैसा होता है। सबसे ऊपर के स्तर पर:

- **इक्विटी योजनाएँ** कंपनियों के शेयर रखती हैं। इक्विटी ऐतिहासिक रूप से पोर्टफोलियो का ज़्यादा उतार-चढ़ाव वाला, बढ़त की ओर झुका हिस्सा रही है; पिछला प्रदर्शन भविष्य के नतीजों का संकेत नहीं है। कम समय में इनमें काफ़ी उतार-चढ़ाव होता है, और ऊँचाई से एक-तिहाई की गिरावट आम बात है, कोई खराबी नहीं।
- **डेट योजनाएँ** बॉन्ड और उन जैसे साधन रखती हैं। ज़्यादा स्थिर, पर तय नहीं और बिना जोखिम भी नहीं: इनमें ब्याज-दर का जोखिम और क्रेडिट जोखिम होता है, और इनका मूल्य गिर सकता है और गिरता भी है।
- **हाइब्रिड योजनाएँ** दोनों का तय मिश्रण रखती हैं।

किस पैसे के लिए कौन-सा प्रकार ठीक बैठता है, यह ज़्यादातर इस पर निर्भर करता है कि वह पैसा कितने समय तक बिना छुए रह सकता है, इस पर नहीं कि आपको कितना रिटर्न चाहिए। इक्विटी, डेट और हाइब्रिड में बताया गया है कि हर श्रेणी असल में क्या रखती है, और उससे संभावित नतीजों के दायरे पर क्या असर पड़ता है।

खर्च कितना होता है

एक्सपेंस रेशियो यानी योजना चलाने का सालाना खर्च, संपत्ति के प्रतिशत के रूप में। इसका अलग बिल नहीं आता; यह योजना में से ही कटता है, इसलिए आप जो NAV देखते हैं वह इस खर्च के बाद का ही होता है।

कुछ योजनाओं में **एग्जिट लोड** भी होता है — तय अवधि (अक्सर लगभग एक साल) से पहले निकालने पर लगने वाला शुल्क। योजना के दस्तावेज़, SID और KIM, में यह ठीक-ठीक लिखा होता है।

टैक्स, एक पैराग्राफ़ में

टैक्स तब लगता है जब आप यूनिट बेचते (रिडीम करते) हैं, रखे रहने तक नहीं। इक्विटी और डेट योजनाओं पर टैक्स अलग तरह से लगता है, और कितने समय रखा यह भी मायने रखता है। डिविडेंड (IDCW) पर आपके स्लैब के

हिसाब से टैक्स लगता है। ठीक-ठीक दरें वित्त कानून के साथ बदलती हैं और आपकी परिस्थिति पर निर्भर करती हैं, इसलिए किसी वेबसाइट के आँकड़े पर — इस वेबसाइट समेत — भरोसा करने की बजाय किसी योग्य टैक्स सलाहकार से जाँच लें।

क्या गलत हो सकता है

मूल्य गिर सकता है, और उसकी कोई निचली सीमा नहीं है। म्यूचुअल फंड का ढाँचा आपको फंड हाउस के डूबने से बचाता है — जो अलग और बहुत दुर्लभ जोखिम है — पर फंड की संपत्ति का मूल्य गिरने से नहीं।

कुछ डेट योजनाओं में, जब उनके बॉन्ड की रेटिंग घटी या डिफॉल्ट हुआ, तब सचमुच नुकसान हुआ है। कुछ इक्विटी श्रेणियाँ तेज़ी से गिरी हैं और सालों तक नीचे रही हैं। पिछला प्रदर्शन भविष्य के नतीजों का संकेत नहीं है, किसी भी दिशा में।

यह व्यवस्था मज़बूत है और इसका नियमन अच्छा है। पर इसका मतलब “सुरक्षित” नहीं, और यह फ़र्क बुरे वक़्त में खुद सीखने से बेहतर है कि आप अभी हमसे सुन लें।

शुरुआत करनी हो तो

आपको PAN, आधार (या कोई दूसरा मान्य पहचान और पते का प्रमाण) और अपने नाम पर बैंक खाता चाहिए, और **KYC** — एक बार की पहचान जाँच — KRA (KYC पंजीकरण एजेंसी) के ज़रिए पूरी करनी होती है। एक बार हो जाने के बाद यह सभी फंड हाउस में चलती है।

अगला सवाल यह है कि आपकी अवधि के लिए कौन-सी श्रेणी ठीक बैठती है, और ऐसी कौन-सी रकम जो अच्छे नहीं, बुरे महीने में भी चलती रह सके। ज़्यादातर लोग SIP से शुरुआत करते हैं — हर महीने तय तारीख़ पर तय रकम का निवेश। SIP कैलकुलेटर दिखाता है कि हर महीने की तय रकम समय के साथ कितनी हो सकती है।

English original: <https://h2investment.in/learn/what-is-a-mutual-fund>

SIP क्या है?

SIP यानी तय तारीख पर तय रकम निवेश करने का निर्देश। यह खरीदने की चीज़ नहीं, योजना में पैसा लगाने का एक तरीका है — और यह फ़र्क समझ आए तो ज़्यादातर उलझन दूर हो जाती है।

SIP (सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान, व्यवस्थित निवेश योजना) यानी तय रकम, तय तारीख पर, नियमित अंतराल पर — आम तौर पर हर महीने — निवेश करने का निर्देश। बस, इतना ही। सबसे काम की बात यह समझना है कि SIP क्या *नहीं* है: यह कोई प्रोडक्ट नहीं, योजना नहीं, फंड का प्रकार भी नहीं। यह फंड में निवेश करने का एक तरीका है।

यह कैसे काम करता है

SIP शुरू करते समय आप योजना, रकम और तारीख चुनते हैं, और ऑटो-डेबिट की अनुमति देते हैं ताकि हर महीने रकम कटे। हर तारीख पर उस पैसे से उस दिन के NAV पर योजना की यूनिट खरीदी जाती हैं, और यूनिट समय के साथ आपके फोलियो में जुड़ती जाती हैं। शुरू करने के कदम पहली SIP कैसे शुरू करें में हैं।

SIP “खरीदने” की चीज़ क्यों नहीं है

लोग अक्सर कहते हैं “मैंने SIP ली”, और ये शब्द असली ढाँचा छिपा देते हैं। आप SIP नहीं खरीदते; आप SIP के ज़रिए किसी योजना में निवेश करते हैं। उसी योजना में एक साथ बड़ी रकम (लम्पसम) भी लगाई जा सकती है — योजना वही रहती है, बस पैसा लगाने का तरीका बदलता है। SIP को तरीका और योजना को अपनी चीज़ मानने से आगे की बहुत-सी उलझनें टल जाती हैं।

नियमित निवेश क्या करता है

SIP कई तारीखों पर खरीदती है, इसलिए कई अलग-अलग NAV पर खरीदती है — कभी ऊँचे, कभी नीचे — और प्रति यूनिट आपकी औसत कीमत उन दामों का औसत बनती है। इसे रुपी कॉस्ट एवरेजिंग कहते हैं। यह गणित है, सुरक्षा नहीं: यह नुकसान नहीं रोकता, बस आपकी खरीद को एक दिन की बजाय समय में बाँट देता है। एकमुश्त निवेश से इसकी तुलना SIP या एकमुश्त निवेश में है।

असली फ़ायदा

SIP का सबसे बड़ा फ़ायदा आदत का है। निवेश अपने-आप होता है, इसलिए हर महीने “लगाऊँ या नहीं?” का फ़ैसला नहीं लेना पड़ता — और लोग सबसे ज़्यादा गलती इसी फ़ैसले में करते हैं, “सही समय” का इंतज़ार करते हुए, जो कभी बताकर नहीं आता। SIP अच्छे और बुरे, दोनों महीनों में निवेश जारी रखती है, और लंबे समय में यह किसी एक सही समय की खरीद से अक्सर ज़्यादा मायने रखता है।

SIP बंधन नहीं, बदली जा सकती है

SIP ऐसा बंधन नहीं जिसे बदला न जा सके। आप इसे रोक सकते हैं, रकम बदल सकते हैं, बंद कर सकते हैं, या समय के साथ स्टेप-अप SIP से बढ़ा सकते हैं। ऑटोमेशन एक सुविधा है, फंदा नहीं — शुरू करने से पहले यह जानना अच्छा है, ताकि “बँध जाऊँगा” का डर आपको शुरुआत से न रोके। हर महीने की रकम समय के साथ कैसे जुड़ती है, यह SIP कैलकुलेटर आपके अपने आँकड़ों पर दिखाता है।

English original: <https://h2investment.in/learn/what-a-sip-actually-is>

पहली SIP कैसे शुरू करें

SIP शुरू करना एक छोटी, क्रमवार प्रक्रिया है: KYC पूरी करें, ऑटो-डेबिट मैंडेट लगाएँ, तारीख और रकम तय करें, और पहली किस्त कटने दें।

SIP यानी किसी योजना में हर महीने तय तारीख पर तय रकम निवेश करने का निर्देश। पहली SIP लगाने में क्रम से चार कदम हैं: KYC पूरी करना, योजना और रकम तय करना, ऑटो-डेबिट मैंडेट लगाना, और तारीख चुनना। उसके बाद किस्त अपने-आप कटती है। हर कदम, और पहली कटौती पर असल में क्या होता है, नीचे है।

कदम 1: KYC पूरी करें

KYC (नो योर कस्टमर, यानी ग्राहक की पहचान) पहले म्यूचुअल फंड निवेश से पहले की एक बार की पहचान जाँच है; इसके पूरा हुए बिना कुछ नहीं खरीदा जा सकता। इसमें PAN और आधार (या कोई दूसरा मान्य पहचान और पते का प्रमाण) लगते हैं, और एक बार पूरी होने के बाद यह हर फंड हाउस में चलती है। अगर आपने पहले कभी निवेश नहीं किया है, तो सबसे ज़्यादा समय इसी कदम में लगता है, इसलिए इसे पहले पूरा कर लेना सुविधाजनक रहता है। KYC कैसे पूरी करें और शुरू करने के लिए क्या चाहिए की सूची में पूरा ब्योरा है।

कदम 2: योजना और रकम

फिर तय होता है कि किस योजना में और हर महीने कितनी रकम लगानी है। शुरुआत में रकम से ज़्यादा आदत मायने रखती है: बुरे महीने में भी चलती रह सके ऐसी रकम, बीच में बंद करनी पड़े ऐसी बड़ी रकम से ज़्यादा काम की है। बचे हुए पैसे के हिसाब से नहीं, अपने लक्ष्य के हिसाब से रकम कैसे तय करें, यह वित्तीय लक्ष्य तय करना में है, और SIP कैलकुलेटर अलग-अलग मासिक रकम समय के साथ कितनी होती है यह दिखाता है — आपके अपने आँकड़ों पर गणित, भविष्यवाणी नहीं।

कदम 3: ऑटो-डेबिट मैंडेट (NACH)

SIP एक **मैंडेट** पर चलती है: एक स्थायी निर्देश, जिससे फंड हर महीने आपके बैंक खाते से किस्त अपने-आप ले सकता है। भारत में यह आम तौर पर NACH (नेशनल ऑटोमेटेड क्लियरिंग हाउस) पर चलता है — ज़्यादातर नियमित बैंक कटौतियों के पीछे यही व्यवस्था है। आप मैंडेट एक बार मंजूर करते हैं और उसमें कटौती की अधिकतम रकम तय करते हैं; फिर हर महीने आपको कुछ नहीं करना पड़ता। बैंक में मैंडेट दर्ज होने में कुछ कामकाजी दिन लगते हैं, इसलिए पहली कटौती हमेशा तुरंत नहीं होती।

कदम 4: तारीख चुनें

महीने की किस तारीख को किस्त कटे, यह आप चुनते हैं। बहुत से लोग तनख्वाह आने के कुछ दिन बाद की तारीख रखते हैं, ताकि कटौती के समय खाते में पैसा हो। इसके अलावा, ठीक कौन-सी तारीख है इससे लंबे समय के नतीजे में ख़ास फ़र्क नहीं पड़ता — SIP बनी ही ऐसी है कि तारीख पर ज़्यादा माथापच्ची न करनी पड़े।

पहली कटौती पर क्या होता है

चुनी हुई तारीख पर मैडेट आपके बैंक खाते से रकम काटता है और पैसा योजना में जाता है। आपको मिलने वाली यूनिट यानी आपकी किस्त भाग उस दिन का NAV। किस दिन का NAV मिलेगा, यह इस पर निर्भर करता है कि पैसा रोज़ के कट-ऑफ़ समय से पहले फंड तक पहुँचा या बाद में — हालाँकि SIP में इस समय का ध्यान मैडेट ही रखता है। दूसरे महीने से यह सब अपने-आप होता है, और यूनिट आपके फोलियो में जुड़ती जाती हैं।

SIP चालू होने के बाद

SIP बंधन नहीं है: आप इसे रोक सकते हैं, रकम बदल सकते हैं या बंद कर सकते हैं, और आमदनी बढ़ने पर स्टेप-अप SIP से इसे बढ़ा भी सकते हैं। SIP को काम करता रखती है एक ही बात — ख़बरें देखकर शुरू-बंद करने की बजाय उतार-चढ़ाव में भी इसे चलते रहने देना। मैडेट, कागज़ी काम या पहली किस्त ठीक से लगाने में किसी का साथ चाहिए, तो यह उन कामों में से एक है जिनमें हम मदद करते हैं।

English original: <https://h2investment.in/learn/how-to-start-your-first-sip>

KYC कैसे पूरी करें

KYC एक बार की पहचान जाँच है। यह KRA के ज़रिए एक ही बार होती है, और फिर हर फंड हाउस में चलती है — पूरी बात यही है।

म्यूचुअल फंड में पहला रुपया लगाने से पहले आपको **KYC-कम्प्लायंट** होना पड़ता है। KYC यानी “नो योर कस्टमर” — आप वही हैं जो आप कहते हैं, इसकी जाँच। यह फंड हाउस की बनाई अड़चन नहीं; भारत के मनी-लॉन्ड्रिंग विरोधी कानून के तहत कानूनी ज़रूरत है, और इसके पूरा हुए बिना कोई भी — न फंड हाउस, न हमारे जैसा वितरक — आपका निवेश प्रोसेस कर सकता है। अच्छी बात यह है कि यह एक ही बार का काम है, और इसका ढाँचा समझ आ जाए तो ज़्यादा से ज़्यादा एक दोपहर, और अक्सर दस मिनट लगते हैं।

अच्छी बात यह है कि यह एक ही बार का काम है, और इसकी रूपरेखा समझ आ जाने के बाद इसमें ज़्यादा से ज़्यादा एक दोपहर लगती है, और अक्सर दस मिनट।

KYC असल में क्या है

KYC दो चीज़ों की जाँच है: आपकी **पहचान** और आपका **पता**। ज़्यादातर लोगों के लिए PAN पहचान साबित करता है, और आधार दोनों साबित करता है, क्योंकि उसमें फ़ोटो और पता दोनों होते हैं।

इस जाँच का रिकॉर्ड किसी एक फंड हाउस के पास नहीं रहता। यह एक **KRA** — KYC पंजीकरण एजेंसी — के पास केंद्रीय रूप से रहता है, जो इसी काम के लिए SEBI में पंजीकृत संस्था है। फंड हाउस या वितरक आपकी KYC जाँचते हैं, तो वे KRA का रिकॉर्ड देखते हैं, अपना नया रिकॉर्ड नहीं बनाते। इसी एक व्यवस्था की वजह से KYC हर जगह चलती है।

सिर्फ़ एक बार क्यों करनी पड़ती है

रिकॉर्ड KRA के पास केंद्रीय रूप से रहता है, इसलिए पहले निवेश के लिए की गई KYC बाद के सभी निवेशों के लिए चलती है। अगले साल किसी दूसरे फंड हाउस में या दस साल बाद पाँचवें में निवेश करें, तब भी यह दोबारा नहीं करना पड़ता।

इसकी ईमानदार सीमा भी जान लें। “एक बार” का मतलब है *जब तक आपके ब्योरे न बदलें और नियम न बदलें*। घर बदलें, नाम बदले, या नियामक पूरी जाँच की परिभाषा बदले — जो हाल में हुआ है — तो KYC अपडेट या दोबारा पुष्टि करने को कहा जा सकता है। यह नई शुरुआत नहीं; मौजूदा रिकॉर्ड में जोड़ है।

हाथ में क्या रखें

आम मामले में सूची छोटी है:

- आपका **PAN**। इसके बिना काम नहीं चलता — पूरी व्यवस्था इसी नंबर पर चलती है।
- आपका **आधार**, जो ज़्यादातर लोगों के लिए पहचान और पते का सबूत, दोनों एक ही दस्तावेज़ में है।

- एक **फ़ोटो**, और कुछ तरीकों में लाइव सेल्फ़ी या आपका छोटा वीडियो।
- अपने नाम के **ईमेल और मोबाइल नंबर**। किसी रिश्तेदार के नहीं, सचमुच अपने रखना बेहतर है, क्योंकि अब नियामक देखता है कि ये आपके हैं और जाँचे हुए हैं।

असल में *निवेश* करने के लिए बैंक खाता चाहिए, पर पहचान जाँच का वह सीधा हिस्सा नहीं है। खाता खोलने और शुरू करने के लिए क्या चाहिए, यह म्यूचुअल फंड क्या है में है।

तीन तरीके

KYC के एक से ज़्यादा तरीके हैं। वे मुख्य रूप से दो बातों में अलग हैं: बाद में कितना निवेश किया जा सकता है, और शुरुआत में कितनी झंझट है।

- **आधार OTP से ऑनलाइन KYC.** सबसे तेज़: आधार नंबर डालें, OTP से पुष्टि करें, और कुछ मिनटों में काम पूरा। पर इस हल्के तरीके में हर फंड हाउस में सालाना कितना निवेश हो सकता है, इसकी *सीमा* होती है। यह सीमा नियामक तय करता है और पहले बदली भी है, इसलिए इसे याद रखने वाला आँकड़ा नहीं, जाँचने वाला मौजूदा नियम समझें।
- **वीडियो KYC.** एक छोटी लाइव वीडियो कॉल, जिसमें अधिकारी आपका चेहरा PAN से मिलाता है और ब्योरे दर्ज करता है। यह पूरी KYC है, बिना निवेश सीमा के, और घर से हो सकती है।
- **आमने-सामने जाँच.** पुराना तरीका — कोई व्यक्ति सामने बैठकर आपके दस्तावेज़ और पहचान जाँचता है। यह भी पूरी KYC है।

शुरुआत में थोड़ा ही निवेश करना हो, तो OTP वाला तरीका झंझट कम करता है। अगर पता है कि हल्के तरीके की सीमा पार होगी, तो वीडियो से पूरी KYC करने से यह काम दो बार नहीं करना पड़ता।

KYC का स्टेटस होता है, और वह मायने रखता है

KYC रिकॉर्ड सिर्फ़ “हुई” या “नहीं हुई” नहीं होता। उसका एक **स्टेटस** होता है, और आपका अगला निवेश कितना आसान होगा, यह उसी पर निर्भर करता है। पूरी तरह जाँचा हुआ रिकॉर्ड — जिसमें PAN, आधार और संपर्क ब्योरे सब पुष्ट हों — आपको बिना कुछ और पूछे कहीं भी निवेश करने देता है।

जिस रिकॉर्ड में जाँचा हुआ ईमेल या मोबाइल न हो, या जो पुराने दस्तावेज़ पर बना हो, वह “ध्यान देने लायक” दिखा सकता है, और फंड हाउस पैसा लेने से पहले उसे पूरा करने को कह सकता है। इसलिए निवेश से *पहले* स्टेटस देख लेना अच्छा है, लेन-देन के बीच पता चलने से बेहतर। इन स्टेटस के नियम हाल में बदले हैं; अगर आपका स्टेटस ठीक न दिखे, तो ज़्यादातर यह जल्दी सुधर जाता है, कोई बड़ी समस्या नहीं।

हम कहाँ काम आते हैं

इसमें से कुछ भी सलाह नहीं है, और इसके लिए आपको हमारी ज़रूरत ही हो, ऐसा भी नहीं — ऊपर के सभी तरीके हर किसी के लिए खुले हैं। हम इतना कर सकते हैं कि आप जितना निवेश करना चाहते हैं उसके हिसाब से

तरीका चुना जाए, ताकि हल्की KYC करके दूसरी ही किस्त पर उसकी सीमा न अटके, और स्टेटस साफ़ न आए तो उसे समझने में मदद करें।

अगर चाहते हैं कि कोई एक बार साथ बैठकर समझा दे, तो हमें सवाल भेजें। जवाब एक असली व्यक्ति देता है, और इसमें कोई बाध्यता नहीं है।

English original: <https://h2investment.in/learn/completing-your-kyc>

नॉमिनेशन, और यह क्यों मायने रखता है

नॉमिनी वह व्यक्ति है जिसे आपकी मृत्यु के बाद आपकी यूनिट सौंपी जाती हैं। नॉमिनी हो, तो परिवार के लिए धीमा, कागज़ों से भरा दावा सीधा और आसान हो जाता है।

नॉमिनेशन यानी यह नाम देना कि आपकी मृत्यु के बाद आपकी म्यूचुअल फंड यूनिट किसे मिलें। यह एक बार का छोटा कदम है, पर बाद में परिवार कितनी आसानी से पैसा पा सकता है, इसमें बहुत बड़ा फ़र्क डालता है। नॉमिनी न हो, तो मृत्यु के बाद यूनिट पाने की प्रक्रिया — जिसे ट्रांसमिशन कहते हैं — धीमी और कागज़ी हो जाती है; नॉमिनी हो, तो अपेक्षाकृत आसान।

नॉमिनी कौन होता है

नॉमिनी वह व्यक्ति है, जिसे यूनिट-धारक की मृत्यु के बाद फंड हाउस यूनिट सौंपेगा। नॉमिनी रखने से आपके जीते-जी कुछ नहीं बदलता — निवेश पर पूरा नियंत्रण आपका ही रहता है — यह सिर्फ़ इतना तय करता है कि बाद में यूनिट किसे सौंपी जाएँ। तीन तक नॉमिनी रखे जा सकते हैं और हर एक का हिस्सा तय किया जा सकता है, और नॉमिनेशन हर फोलियो के लिए अलग दर्ज होता है।

यह इतना ज़रूरी क्यों है

वैध नॉमिनी हो, तो फंड हाउस मृत्यु और पहचान के सबूत पर — दस्तावेज़ों की छोटी सूची पर — यूनिट उस व्यक्ति को सौंप सकता है। नॉमिनी न हो, तो परिवार को साबित करना पड़ता है कि कानूनी हक़दार कौन है, जिसमें वसीयत, उत्तराधिकार प्रमाणपत्र (सक्सेशन सर्टिफ़िकेट) या ऐसे दस्तावेज़ लगते हैं, और सबसे मुश्किल समय में काफ़ी देरी और खर्च हो सकता है। नॉमिनेशन एक फ़ॉर्म और एक कानूनी प्रक्रिया के बीच का फ़र्क है।

2026 से: एक फोलियो में तीन तक नॉमिनी रखे जा सकते हैं (SEBI का 29 मई 2026 का परिपत्र, 1 सितंबर 2026 से लागू)। नॉमिनी न हो, तब भी छोटी रकम के दावों के लिए अब आसान रास्ते हैं, और वसीयत का प्रोबेट अब ज़रूरी नहीं है (SEBI का 23 जुलाई 2026 का परिपत्र, 22 अगस्त 2026 से लागू)। देखें नॉमिनी अपडेट करना और मृत्यु के बाद।

कैसे जोड़ें या बदलें

पहला निवेश करते समय ही नॉमिनी दिया जा सकता है, और बाद में कभी भी, जिस प्लेटफ़ॉर्म से निवेश किया उसके ज़रिए या रिकॉर्ड रखने वाले रजिस्ट्रार (RTA) के ज़रिए, नॉमिनी जोड़ा या बदला जा सकता है। नया नॉमिनेशन पुराने की जगह ले लेता है। शादी, बच्चे का जन्म या किसी का निधन — ज़िंदगी की ऐसी बड़ी घटना के बाद नॉमिनेशन एक बार फिर देख लेना अच्छा है, ताकि वह अब भी आपकी इच्छा के मुताबिक हो।

नॉमिनी दें, या लिखकर मना करें

नॉमिनेशन इतना ज़रूरी है, इसलिए नियम आपसे साफ़ चुनाव करवाते हैं: या तो नॉमिनी दर्ज करें, या लिखकर घोषित करें कि आप नॉमिनी नहीं रखना चाहते। खाना खाली छोड़कर भूल जाना संभव नहीं। अगर पहले अनजाने में मना कर दिया था, तो बाद में नॉमिनी जोड़ना आसान है।

नॉमिनी वसीयत का विकल्प नहीं है

लोग यहीं गलती करते हैं। नॉमिनी वह व्यक्ति है जिसे फंड यूनिट सौंपता है — ज़रूरी नहीं कि वही कानूनी हक़दार हो। आम तौर पर नॉमिनी कानूनी वारिसों की ओर से ट्रस्टी की तरह यूनिट पाता है, और आखिरी मालिकाना हक़ आपकी वसीयत और उत्तराधिकार कानून तय करते हैं। नॉमिनेशन पैसे तक पहुँच आसान बनाता है; विरासत को दोबारा नहीं लिखता। आपकी पूरी संपत्ति आगे कैसे जाए, इसके लिए वसीयत और सही कानूनी सलाह ही काम आती है, जो नॉमिनेशन नहीं कर सकता।

English original: <https://h2investment.in/learn/nomination-and-why-it-matters>

हमारे साथ काम असल में कैसे चलता है

पाँच चरण, कोई हैरानी नहीं, और किसी भी चरण पर आप रुक सकते हैं।

आपका पैसा असल में कहाँ जाता है

H2 किसी एसेट मैनेजमेंट कंपनी के स्वामित्व में नहीं है, और आगे बढ़ाने के लिए हमारा अपना कोई प्रोडक्ट नहीं है। हमारे पास निकालने के लिए कोई माल नहीं पड़ा, इसलिए बात इससे शुरू हो सकती है कि आपके लिए क्या ठीक है, इससे नहीं कि हम क्या बेच रहे हैं।

हमें भुगतान कैसे होता है

H2 को फंड हाउस भुगतान करते हैं, आप जिन Regular प्लान में निवेश करते हैं उनके खर्च में शामिल कमीशन के ज़रिए; आप हमें अलग से कोई फ़ीस नहीं देते।

बातचीत, बिक्री की बात नहीं

आप किस लिए निवेश कर रहे हैं, पैसा कितने समय तक बिना छुए रह सकता है, और अगर एक साल तक मूल्य गिरा रहे तो आपको कैसा लगेगा। इस बातचीत में कुछ बेचा नहीं जाता और इसमें कोई बाध्यता नहीं है।

अगर लगे कि फ़ीस लेकर योजना बनाने वाले SEBI-पंजीकृत निवेश सलाहकार के पास जाना आपके लिए बेहतर है, तो हम यही कहेंगे।

विकल्प, साथ-साथ

उपयुक्त योजना-श्रेणियाँ आपके सामने रखकर उनके फ़ायदे-नुकसान आसान भाषा में समझाते हैं — हर एक क्या रखती है, इतिहास में उसमें कितना उतार-चढ़ाव रहा है, उसका खर्च क्या है, और क्या होने पर वह गिरेगी।

हमारे लेख और गाइड श्रेणियों की तुलना करते हैं, योजनाओं के नाम लेकर नहीं। NAV लुकअप और न्यू फंड ऑफ़र की सूची AMFI की सार्वजनिक जानकारी से योजनाओं और फंड हाउस के नाम दिखाती हैं; इनमें से कोई भी सुझाव नहीं है। निजी बातचीत में ख़ास योजनाओं पर ज़रूर बात होती है, पर कौन-सी ख़रीदें, यह हम नहीं बताएँगे।

कागज़ी काम, KYC और पहला निवेश

KRA — KYC पंजीकरण एजेंसी — के ज़रिए KYC के लिए PAN, पहचान और पते का प्रमाण (आधार या कोई दूसरा मान्य दस्तावेज़) और अपने नाम पर बैंक खाता चाहिए। हम इसमें साथ रहते हैं और फ़ॉर्म आगे जाने से पहले जाँचते हैं।

पैसा आपके बैंक खाते से फंड हाउस में जाता है। यूनिट आपके नाम पर आवंटित होती हैं, फोलियो पर आपके नॉमिनी के साथ। पैसा हम कभी अपने पास नहीं रखते।

लंबा बीच का समय

नतीजा असल में इसी हिस्से में तय होता है, और ज्यादातर इसमें कुछ खास नहीं होता। तय अंतराल पर समीक्षा: आपकी ज़िंदगी में कुछ बदला है, बँटवारा अब भी लगभग वैसा है जैसा सोचा था, और कोई योजना वही काम तो नहीं कर रही जो दूसरी पहले से कर रही है।

ज़्यादातर समीक्षाएँ बिना बदलाव के खत्म होती हैं। यह अच्छी समीक्षा है, बेकार नहीं।

जब बाज़ार गिरे

बाज़ार गिरेगा ही। तब हमारा संपर्क आएगा, और जो बताएँगे वह असल में क्या हुआ, आँकड़ों में, बिना विशेषणों के।

आपकी योजना में उतार-चढ़ाव के बारे में पहले से क्या माना गया था, वह याद दिलाएँगे और बात करने को तैयार रहेंगे। “गिरावट में खरीदो” नहीं कहेंगे, और “बाज़ार हमेशा लौट आता है” भी नहीं, क्योंकि इसका वादा हम नहीं कर सकते।

हम क्या नहीं करेंगे

सीमाएँ बाद में समझाने से आसान है उन्हें पहले ही साफ़ कह देना।

- **भविष्यवाणी नहीं.** कोई टारगेट रिटर्न नहीं, कोई “अपेक्षित” रकम नहीं, इंडेक्स कहाँ जाएगा इसका अंदाज़ा नहीं। इस साइट पर आप जो भी आँकड़ा देखें, वह आपकी चुनी हुई धारणा पर किया गया गणित है।
- **हमारे लेखों और गाइड में योजना का नाम नहीं.** वे श्रेणियाँ और काम करने का तरीका समझाते हैं। प्रचार की सामग्री में योजनाओं के नाम लेना उस सलाह के करीब चला जाता है, जिसे देने के लिए हम पंजीकृत नहीं हैं। अपवाद दो डेटा पेज हैं: NAV लुकअप और न्यू फंड ऑफ़र की सूची AMFI का सार्वजनिक डेटा जस का तस देते हैं, और इनमें से कोई भी सुझाव नहीं है।
- **जल्दबाज़ी नहीं करवाएँगे.** कोई काउंटडाउन नहीं, मौसमी घबराहट नहीं, “बाज़ार ऊपर है, अभी करो” जैसा दबाव नहीं।
- **बार-बार अदला-बदली नहीं.** योजना बदलने में काराज़ी काम, संभावित एग्जिट लोड और टैक्स आता है। अगर किसी बदलाव की बात करें, तो उसका खर्च भी दिखाएँगे।

हमें आपसे क्या चाहिए

- सच्ची अवधि। “तीन साल” और “बीस साल” अलग-अलग निवेश हैं, और कौन-सा है यह सिर्फ़ आप जानते हैं।
- ऐसी रकम जो आप हर महीने सच में चालू रख सकें, अच्छे महीने में हो सकने वाली सबसे बड़ी रकम नहीं।
- ज़िंदगी में कुछ बदले तो हमें बताएँ — नई नौकरी, घर, बच्चा, माता-पिता की ज़िम्मेदारी। बाज़ार से ज़्यादा यह योजना को बदलता है।
- जिन सालों में कुछ नहीं होता, उनमें धीरज।

जवाब का समय

- सवाल: हर सवाल का जवाब हम खुद देते हैं, सोमवार से रविवार, सुबह 8:00 से रात 10:00 (IST) के बीच। सामान्य सवालों के लिए हम जवाब का कोई तय समय नहीं बताते; NRI सवाल ऑफ़लाइन प्रक्रिया से चलते हैं और उनका जवाब दो कामकाजी दिनों में मिलता है।
- लेन-देन के अनुरोध: ज़्यादातर योजनाओं में, दोपहर 3:00 के कट-ऑफ़ से पहले हमारे पास पहुँचा निर्देश उसी दिन के NAV के लिए लगाया जाता है; उसके बाद का, अगले कामकाजी दिन के NAV के लिए। खरीद में यह इस पर भी निर्भर करता है कि पैसा कट-ऑफ़ से पहले फंड के खाते में पहुँचा या नहीं। लिक्विड और ओवरनाइट फंड में खरीद का कट-ऑफ़ पहले, दोपहर 1:30 है।
- शिकायत: हमारी शिकायत निवारण प्रक्रिया देखें

पहले गणित खुद करके देखें

किसी से बात करने से पहले, यह देखना काम आता है कि आपकी चुनी हुई दर पर हर महीने की रकम समय के साथ क्या बनती है। कैलकुलेटर कोई भविष्यवाणी नहीं करता — वह बस आपकी लिखी धारणा पर चक्रवृद्धि गिनता है।

जब आप शुरू करने को तैयार हों

ज़्यादातर लोग बातचीत से शुरुआत करते हैं — इसमें कोई बाध्यता नहीं और कुछ बेचा नहीं जाता। अगर आप खुद खाता खोलना चाहें, और भारत में रहते हों, तो यह ऑनलाइन कर सकते हैं।

English original: <https://h2investment.in/how-we-work>

यह जानकारी है, सलाह नहीं यह पेज श्रेणियाँ और काम करने का तरीका समझाता है। यह किसी योजना का नाम नहीं लेता, किसी को रैंक नहीं करता और यह नहीं बताता कि क्या खरीदें। H2 Investment एक AMFI-पंजीकृत म्यूचुअल फंड वितरक (ARN-200996) है, SEBI-पंजीकृत निवेश सलाहकार नहीं। व्यक्तिगत वित्तीय योजना के लिए किसी SEBI-पंजीकृत निवेश सलाहकार से बात करें। टैक्स की स्थिति आपकी अपनी परिस्थितियों पर निर्भर करती है और नियम बदलते रहते हैं — अपनी स्थिति किसी योग्य टैक्स सलाहकार से जाँच लें।

This page explains categories and mechanics. It does not name a scheme, does not rank anything and does not tell you what to buy. H2 Investment is an AMFI-registered mutual fund distributor (ARN-200996), not a SEBI-registered investment adviser. For a personal financial plan, talk to a SEBI-registered investment adviser. Tax treatment depends on your own circumstances and the rules change — confirm your position with a qualified tax adviser.

यह अंग्रेज़ी पेज का हिन्दी अनुवाद है। दोनों में कोई अंतर दिखे, तो अंग्रेज़ी पाठ ही मान्य होगा।

This is a Hindi translation of the English page. If the two differ, the English text prevails.

म्यूचुअल फंड निवेश बाज़ार जोखिमों के अधीन हैं। योजना से संबंधित सभी दस्तावेज़ ध्यान से पढ़ें।

Mutual Fund investments are subject to market risks, read all scheme related documents carefully.

हमें अपना सवाल भेजें। जवाब एक असली व्यक्ति देता है, और इसमें कोई बाध्यता नहीं है। हिन्दी, गुजराती या अंग्रेज़ी — जिस भाषा में सहज हों, उसमें बात करें। +91 77779 47060 · info@h2investment.in · WhatsApp +91 77779 47060